अच्छा चरवाहा

(10:1–21)

हम में से अधिकतर लोगों के मन में परमेश्वर की सबसे सुन्दर तस्वीर शायद उसका चरवाहे के रूप में हमें चराने के लिए ले जाना है। यह परमेश्वर का एक ऐसा रूप है जो सुरक्षा, सम्भाल, कोमलता और बलिदान का आभास करवाती है। कई बार परमेश्वर की तुलना एक चरवाहे से और हमारी भेड़ों से करना उपयुक्त होता है। उदाहरण के लिए, भेड़ों की नज़र कमजोर होती है इसलिए उनके लिए बिना अगुआई के चलना कठिन होता है। शत्रुओं द्वारा आक्रमण करने पर वे खुद को असहाय महसूस करती हैं। वे डरकर केवल टांगें अपने नीचे छुपाकर बैठ जाती हैं। भेड़ों का व्यवहार आम तौर पर मूर्खतापूर्ण होता है। खेत में होने पर यदि एक भेड़ किसी काल्पनिक बाधा को पार करने के लिए छलांग लगाए, तो दूसरी भेड़ें भी उसी अस्तित्वहीन लकड़ी या बाड़ को पार करने के लिए छलांग लगा देती हैं। कई बार तो, चरवाहों को भेड़ों को पानी पिलाने के लिए बाड़े में जाकर उन्हें पानी की हौदी की ओर हांकना पड़ता है। जैसे भेड़ों को सहायता की आवश्यकता होती है, वैसे ही हमें भी होती है!

यद्यपि, ''चरवाहा'' हर जगह एक सकारात्मक विचार नहीं है। कई बार चरवाहे आलसी, शराबियों और लापरवाह मजदूरों के रूप में बदनाम होते हैं। जैसे ''पिता'' शब्द का सबसे अच्छा अर्थ होने के बावजूद बुरा अर्थ भी हो सकता है वैसे ही, ''चरवाहा'' शब्द का अर्थ भला या बुरा दोनों हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, भजन 23 एक अच्छे चरवाहे के रूप में परमेश्वर का सुन्दर चित्र दिखाता है। उसके विपरीत पुराने नियम के दो भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए दुष्ट चरवाहों के चित्रण भी मिलते हैं:

> हे मैदान के सब जन्तुओ,
> हे वन के सब पशुओ,
> खाने के लिए आओ।
> उसके पहरुए अन्धे हैं,
> वे सब के सब अज्ञानी हैं,
> वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते;
> वे स्वप्न देखने वाले और लेटे रहकर सोते रहना चाहते हैं।
> वे मरभूखे कुत्ते हैं जो कभी तृप्त नहीं होते।

वे चरवाहे हैं जिन में समझ ही नहीं;
उन सभों ने अपने-अपने लाभ के लिए अपना-अपना मार्ग लिया है।
वे कहते हैं कि आओ, हम दाख मधु ले आएं,
आओ मदिरा पीकर छक जाएं;
कल का दिन भी तो आज ही के समान अत्यन्त सुहावना होगा
(यशायाह 56:9-12)।

''उन चरवाहों पर हाय जो मेरी चराई की भेड़-बकरियों को तितर-बितर करते और नाश करते हैं, यहोवा यह कहता है। इसलिए इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के चरवाहों से यों कहता है, तुम ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, वरन उनको तितर-बितर किया और बरबस निकाल दिया है, इस कारण यहोवा की यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों का दण्ड दूंगा। तब मेरी भेड़-बकरियां जो बची हैं, उनको मैं उन सब देशों में से जिन में मैं ने उन्हें बरबस भेज दिया है, स्वयं ही उन्हें लौटा लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठा करूंगा, और वे फिर फूलें-फलेंगी'' (यिर्मयाह 23:1-4)।

यूहन्ना 10 अध्याय को आम तौर पर ''अच्छे चरवाहे का अध्याय'' कहा जाता है। यह अध्याय यीशु द्वारा जन्मजात अंधे को चंगा करने की कहानी और यीशु के विरोधियों के आत्मिक अंधेपन की चर्चा के तुरन्त बाद आता है। इसके बाद यूहन्ना द्वारा यीशु का वृत्तांत सुसमाचार की इस पुस्तक में लिखित यीशु के अन्तिम सार्वजनिक संदेश के साथ जारी रहता है। अंधेपन का उल्लेख होने से चर्चा का केन्द्र-बिन्दु भेड़ों की ओर हो जाता है, परन्तु संदेश लगभग वही रहता है कि यीशु सचमुच परमेश्वर का पुत्र है और जो लोग ईमानदार और कोमल हृदयों वाले हैं, वे उसे ग्रहण करने आएंगे। पवित्र शास्त्र के हमारे इस पाठ का संदेश यीशु द्वारा किए गए ''मैं हूं'' के दो और दावों पर केन्द्रित है।

''द्वार मैं हूं'' (10:1-10)

प्रवचन का आरम्भ भेड़ों और उनके चरवाहों के बारे में एक रूपक से होता है जिसमें यीशु भेड़ों के बाड़े की एक प्रसिद्ध आकृति का इस्तेमाल करता है (10:1-5)। रात को कई बार भेड़ों को पत्थरों या झाड़ियों से बनाए गए बाड़े में रखा जाता था। भेड़ों को इस तरह इकट्ठा करके रखने से उन्हें जंगली जानवरों तथा चोरों से बचाव करने में सुविधा होती थी। यीशु ने अपने सुनने वालों को याद दिलाया कि किस प्रकार सच्चे चरवाहे अपनी भेड़ों के पास द्वार से ही जाते हैं। वे अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाते हैं और उनकी भेड़ें अपनी इच्छा से उनके पीछे चल पड़ती हैं। दूसरी ओर, चोर भेड़ों को चुराने के लिए दीवार फांदकर आता है। यीशु यह कह रहा था कि वह परमेश्वर के लोगों को धोखा देने या उनसे चालाकी करने नहीं आया। वह अपने पीछे चलने वालों को इकट्ठा करने के लिए दीवार फांदकर नहीं बल्कि लोगों को बताकर द्वार से ही आया। परन्तु उस समय उसके सुनने वालों को यह बात समझ नहीं आई थी (10:6)।

यीशु ने फिर मुंह खोलकर कहा, ''कि भेड़ों का द्वार मैं हूं'' (10:7)। दूसरे लोगों ने भी परमेश्वर के चरवाहे होने का दावा किया होगा, परन्तु थे वे चोर और लुटेरे ही। परमेश्वर की वास्तविक भेड़ों ने नकली चरवाहों की आवाज़ का उत्तर नहीं दिया, और यीशु ने दावा किया कि परमेश्वर के पास जाने के लिए केवल वह ही वास्तविक द्वार है। यह उसकी इस बात से मेल खाता है कि ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। ''द्वार मैं हूं'' पिता के साथ एक होने और उस तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग होने का दावा है। दूसरे मार्ग से आने की कोशिश करने वाले केवल चोर और लुटेरे ही थे। मुझे एक बार किसी टीनेजर (नवयुवक) का पता चला, जो नाई की दुकान में काम करने के साथ-साथ जूते पॉलिश और फर्श साफ करता था। कुछ समय बाद, उसने देखा कि दुकान में सॉफ्ट ड्रिंक की मशीन में बहुत पैसे डाले जा रहे हैं और वह स्कीमें बनाने लगा कि उन पैसों को कैसे चुराया जाए। एक रात उसने नाई की दुकान में आधी रात के बाद आकर रोशनदान में से छत पर चढ़कर सेंध लगाने की कोशिश की। गड़बड़ केवल यही हुई कि वह रोशनदान में फंस गया और पकड़ा गया। पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर, वह बचाव के लिए गिड़गिड़ाने लगा और यह समझाने की कोशिश करने लगा कि वह कोई गलत काम नहीं कर रहा था! परन्तु, किसी ने उसकी कहानी पर विश्वास नहीं किया! ईमानदार लोग जिनके मन में कोई कपट नहीं होता, छत से नहीं बल्कि द्वार से चलकर आते हैं। झूठे शिक्षकों के बारे में यीशु यही बात कह रहा था।

धर्म के ''गंदे नीच रहस्यों'' में से एक यह है कि कुछ धार्मिक अगुवे वास्तव में परमेश्वर की बातों में दिलचस्पी नहीं लेते। कई तो कलीसिया से जुड़े मामलों में भाग ही धन, पदवी या शक्ति की लालसा पूरी करने के लिए लेते हैं। जब भी किसी नये घपले का पता चलता है तो हम हैरान रह जाते हैं कि क्या कलीसिया के किसी अगुवे ने ऐसा काम किया होगा। मुझे नहीं लगता कि चोरों और लुटेरों के झुंड को गुमराह करने की कोशिश करते देख यीशु को कोई हैरानी हुई हो। वह जानता था कि झुंड को केवल चाहता ही नहीं था, परन्तु वह जानता था कि सच्चा चरवाहा और जिसे झुंड की भलाई की चिंता है केवल वही है। उसने कहा, ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (10:10ख)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार की पूरी पुस्तक में, यीशु को द्वार से प्रवेश करते दिखाया गया है। उसकी सेवकाई में किसी प्रकार की कोई चालबाजी, चालाकी, धोखा या स्वार्थ नहीं था। बेशक उसकी बातों पर काफी विवाद हुआ और अन्तत: उसका दाम उसे अपना प्राण देकर चुकाना पड़ा, तो भी यीशु ने ''द्वार'' से जाने पर ही बल दिया। वह जानता था कि जिनके मन परमेश्वर की ओर मुड़ गए हैं वे उसकी आवाज सुनकर उसके पीछे अवश्य चलेंगे, संसार चाहे कुछ भी कर ले।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इस्राएल में ठहरे तुर्की सिपाहियों के एक भूखे दल ने भेड़ों के झुंड पर आक्रमण कर दिया। यह सोचकर कि इससे एक अच्छी दावत हो जाएगी, वे भेड़ों को अपने कैंप की ओर हांकने लगे। बेचारे चरवाहे के पास जो भेड़ों की रखवाली कर रहा था उन सिपाहियों से लड़ने के लिए कोई हथियार नहीं था, सो वह विपरीत दिशा में

भागकर एक गहरी घाटी के पार, एक पहाड़ी की चोटी पर चला गया। फिर भेड़ों की ओर मुंह करके, अपने हाथों का मुंह के सामने कुप्पा बनाकर जैसे आम तौर पर वह भेड़ों को पुकारा करता था, उन्हें पुकारने लगा। भेड़ें एकदम सिपाहियों के साथ जाना छोड़कर अपने चरवाहे की ओर भागने लगीं। सिपाही इतने हैरान थे कि वे अंधेरे में अपनी ''दावत'' को गायब होने से रोकने के लिए कुछ नहीं कर पाए।[1]

अपनी भेड़ों के साथ यीशु का भी यही सम्बन्ध है! उसकी भेड़ें आज भी उसकी आवाज सुनती हैं। परमेश्वर के सच्चे खोजी उसकी आवाज़ को पहचानकर उसे ढूंढ़ लेते हैं। उन्हें वह भरपूरी का जीवन देगा। यूहन्ना रचित सुसमाचार में ''जीवन'' एक मुख्य बात है (20:31)। यह ''अच्छा जीवन'' या ''सुविधाजनक जीवन'' नहीं है जिसका हम आमतौर पर पीछा करते हैं; बल्कि यह वह ''भरपूरी का जीवन'' है जो यीशु उनको देता है जो उसकी आवाज़ सुनते हैं।

''अच्छा चरवाहा मैं हूं'' (10:11-18)

द्वार होने के यीशु के दावे से जुड़ा, परन्तु इससे थोड़ा अलग अर्थात यीशु का ऐलान ''अच्छा चरवाहा मैं हूं'' (10:11क) होने का था। जैसे पहले कहा गया था, ''चरवाहा'' शब्द के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। इस अवसर पर, यीशु के मन में इसका एक विशेष अर्थ था कि ''अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है'' (10:11ख)। यद्यपि यूहन्ना रचित सुसमाचार में नौ से अधिक अध्यायों तक उसकी मृत्यु का उल्लेख नहीं है, परन्तु यीशु अपने चेलों को पहले ही बता रहा था कि क्रूस का अर्थ क्या होगा। अच्छा चरवाहा होने के कारण, वह भेड़ों के लिए अपना प्राण देने को तैयार और इच्छुक था। इन संक्षिप्त आयतों में उसने पांच बार ज़ोर देकर कहा कि उसकी मृत्यु उसके वश से बाहर की बात नहीं थी। जब वह मरा, तो यह इसलिए था क्योंकि उसने अपना प्राण देना स्वयं चुना था!

> ''... अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है'' (10:11)।
>
> ''... और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूं'' (10:15)।
>
> ''... मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं'' (10:17)।
>
> ''कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं'' (10:18क)।
>
> ''मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है'' (10:18ख)।

अपनी भेड़ों के लिए प्राण देना अच्छे चरवाहे की पहचान है। भाड़े के चरवाहों में

इतनी वफ़ादारी और बलिदान देखने को नहीं मिलता। मुसीबत आने पर, वे भेड़ों को भूलकर छुप जाते हैं।

दाऊद (जो बाद में इस्राएल का राजा बना) भी जवानी में एक चरवाहा था। चरवाहे के रूप में काम करते हुए उसने जीवन, अगुआई करने और परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीखा। विशेषकर उसने सीखा कि एक अच्छा चरवाहा होने का क्या अर्थ है। दाऊद ने अपने आपको फलस्तीनी दैत्य गोलियत से लड़ने के लिए पेश करते हुए, शाऊल से कहा:

> तेरा दास अपने पिता की भेड़ बकरियां चराता था; और जब कोई सिंह या भालू झुण्ड में से मेम्ना उठा ले जाता, तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मेम्ने को उसके मुंह से छुड़ा लेता; और जब वह मुझ पर हमला करता, तब मैं उसके केश को पकड़कर उसे मार डालता। तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मारा है; और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, ... (1 शमूएल 17:34-36)।

इस्राएल के भावी राजा ने अपने आपको एक विश्वसनीय और अच्छा चरवाहा प्रमाणित कर दिया था परन्तु बाद में उसे परमेश्वर के लोगों पर विश्वसनीय चरवाहा सिद्ध होना था।

यीशु, जिसे सुसमाचार की पुस्तकों में प्राय: ''दाऊद का पुत्र'' कहा गया है, अच्छा चरवाहा था और है। वह उसकी संभाल में दी गई भेड़ों की (अर्थात आपकी और मेरी) भलाई और सम्भाल के प्रति इतना समर्पित था जैसे दाऊद अपनी भेड़ों के झुंडों के लिए अपना प्राण दांव पर लगा देता था वैसे ही उसने भी हमारे लिए अपना प्राण दे दिया। अच्छे चरवाहे के रूप में बात करते हुए, यीशु ने यह स्पष्ट किया कि उसने ''अपनी इच्छा'' (10:18) से ही क्रूस पर जाना था। यहूदा, महायाजक, पीलातुस और भीड़ सब ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में अपना योगदान देना था, पर उन्हें यह अहसास नहीं था कि ऐसी निर्दयता केवल तभी हो सकती थी क्योंकि यीशु अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण देने के लिए तैयार था। अच्छा चरवाहा वही है!

बाद में यूहन्ना रचित सुसमाचार में, दो बातों से हमें याद आता है कि यीशु ने अच्छे चरवाहे की अपनी बातचीत में क्या कहा था। यीशु के मुकदमे में, रोमी राज्यपाल पीलातुस ने यीशु से एक प्रश्न पूछा। जब उसने उत्तर देने से इन्कार कर दिया, तो पीलातुस ने कहा, ''मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?'' (19:10)। यीशु ने, जो कि अच्छा चरवाहा है, उत्तर दिया, ''यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता ...'' (19:11)। बेशक उस समय किसी को समझ नहीं आई, पर वह अपने आपको क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति न देता तो पीलातुस यीशु को कभी क्रूस पर न चढ़ा पाता। यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना वास्तव में अच्छे चरवाहे का प्रेमपूर्वक बलिदान था। अन्त में, जब यीशु क्रूस पर लटक रहा था, तो उसने ''सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए'' (19:30)। यूहन्ना के शब्दों में यह कोई दुर्घटना नहीं थी। किसी ने यीशु से उसका प्राण छीना नहीं था।

किसी ने उसकी हत्या नहीं की थी। किसी ने उसे बहकाकर क्रूस पर चढ़ने के लिए फंसाया नहीं था बल्कि उसने स्वयं अपने आपको दे *दिया*।

सारांश (10:19, 20)

एक बार फिर हम देखते हैं कि यीशु की अद्भुत बातों से लोगों में फूट पड़ गई थी। कुछ लोगों का कहना था कि उसमें भूत है, जो कि उसे बदनाम करने के लिए मात्र एक आरोप था, ऐसा आरोप जैसे किसी को "पागल" या "मानसिक संतुलन खो बैठा" कहना होता है। पर दूसरे लोग जन्म के अंधे की आंखें खोलने में सामर्थ से भरे उसके आश्चर्यकर्म से हैरान हो रहे थे। वे अपने आपको यह विश्वास नहीं दिला पाए कि कोई दुष्टात्मा ऐसा अविश्वसनीय कार्य कर सकता है। बेशक यीशु अपनी सभी भेड़ों से प्रेम करता था, पर उनमें से कुछ भेड़ें बदले में उससे प्रेम करती थीं जबकि दूसरी घृणा। उनकी प्रतिक्रिया से हमें ध्यान आता है कि यीशु हमें अपने पीछे चलने के लिए आवाज़ देता है, पर निर्णय लेने को वह हम पर ही छोड़ देता है।

यीशु अच्छा चरवाहा है। उसकी भेड़ें उसकी आवाज़ को पहचानती और उसकी पीछे चलती हैं। आज भी वह किसी निकट की पहाड़ी की चोटी पर खड़ा होकर आपको बुला रहा है। क्या आपको उसकी आवाज सुनाई दे रही है? क्या आप उसकी आवाज़ को पहचानते हैं? क्या आप उसके पीछे चलेंगे? याद रखें कि उसने आपके लिए अपने आपको दे दिया!

पाद टिप्पणी

[1]माइकल ग्रीन, *इलस्ट्रेशंस फ़ॉर बिब्लिकल प्रीचिंग* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1982), 420.